PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Punjab Kesari, Delhi
Fri, 09 Jun 2017, Page 16
Width: 11.01 cms, Height: 19.71 cms, a4, Ref: 33.2017-06-09.36

योग को राजनेताओं से बचाने की कवायद

एक वक्त वह भी था जब खेल और राजनीति को नदी के दो किनारों की तरह माना जाता था। यहां तक कहा जाता था कि राजनेताओं की खेलों में घुसपैठ से खेल बर्बाद हो जाएंगे लेकिन आज आलम यह है कि कोई भी खेल राजनेताओं, नेता, सांसद, विधायकों की मौजूदगी के बिना नहीं चल पा रहा। ज्यादातर खेल संघों के मुखिया नेता ही हैं और शायद उनकी उपस्थिति से खेल तरक्की भी कर रहे हैं। अब कुछ इसी तरह की बातें योग को लेकर भी की जा रही हैं। खासकर तब से जबकि पहली बार संयुक्त राष्ट्र संघ ने योग के महत्व पर मुहर लगाई है, भारत में योग को राजनीति से बचाने की बातें की जाने लगी हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि 21 जून 2015 को देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वयं राजपथ पर 21 आसन किए। योग दिवस को 84 देशों ने अपने स्तर पर सम्मान दिया और राजपथ पर 35985 लोगों ने योगासन किए। उम्मीद की जा रही है कि 21 जून 2017 को तीसरे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को दुनिया के 170 देश मनाएंगे। भारत में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, यूपी के मुख्यमंत्री योगी भी इस दिवस पर अपनी उपस्थिति दर्ज कर सकते हैं। थोड़ा पीछे चलें तो कांग्रेसी सरकारों ने धीरेन्द्र ब्रह्मचारी को भारतीय योग का पहला ब्रांड एम्बेसडर के रूप में पेश किया। अब यही सम्मान बाबा रामदेव को मिला है, जिन्हें बाकायदा हरियाणा सरकार ने योग का ब्रांड एम्बेसडर घोषित किया है। ब्रह्मचारी को तो सीधे-सीधे इंदिरा जी का आशीर्वाद प्राप्त था। बेशक योग का जन्मदाता भारत है और भारत सरकार के प्रयासों से ही योग दिवस को पूरी दुनिया ने अपनाया है लेकिन भारतीय योग संस्थान और अन्य प्रमुख योग संस्थानों ने फिलहाल खुद को राजनीति के सीधे प्रवेश से बचाए रखा है। फिर भी कहीं न कहीं राजनीति तो है। योग संस्थानों का भीतरघात भी तो एक तरह की राजनीति है। कांगरेस के बाद अब भाजपा ने योग को गोद लिया है और बेहतर ब्रांडिंग के जरिए योग को दुनिया में लोकप्रिय बनाया है। यह राजनीति न सही पर राजनीतिक प्रयासों से योग का फैसला तो है ही। जहां तक भारतीय योग संस्थान की बात है तो योग को घर-घर तक पहुंचाने वाला यह संस्थान फिलहाल ठीक-ठाक चल रहा है। नेता और राजनेता मंच से दूर रखे जाते हैं। उन्हें साधकों के साथ आसन दिया जाता है लेकिन कब तक? शायद अब कुछ बदलावों को अपनाने और लचीलापन दिखाने का वक्त आ गया है। योग का सर्वाधिक फैलाव स्वामी विवेकानंद ने किया था। वही काम अब मोदी कर रहे हैं, जो कि एक नेता भी हैं।